# 13
# महावीर प्रसाद द्विवेदी
**(जन्म : 1864 ई. / मृत्यु : 1938 ई.)**

## जीवन परिचय –

महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर ग्राम में सन् 1864 में हुआ। इनके पिता पं. रामसहाय दुबे कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। पारिवारिक आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण स्कूली शिक्षा पूर्ण कर इन्होंने रेलवे में नौकरी कर ली। लेकिन स्वाभिमानी स्वभाव के धनी द्विवेदी जी ने कुछ समय पश्चात् रेलवे से इस्तीफा दे दिया। आप सन् 1903–1920 तक सरस्वती पत्रिका के संपादन से जुड़े रहे। सन् 1938 ई॰ में महावीरप्रसाद द्विवेदी का निधन हो गया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रखर व्यक्तित्व एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। द्विवेदी जी कवि, समालोचक, निबंधकार, संपादक, भाषा वैज्ञानिक, इतिहासकार अर्थशास्त्री आदि विविध रुपों में उभरकर सामने आये। आपने 1903–1920 तक सरस्वती के संपादक रहते हुए हिन्दी व्याकरण एवं वर्तनी के नियम स्थिर करके हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया। द्विवेदी जी ने अपने समकालीन कवियों एवं लेखकों का साहित्य रचना में मार्गदर्शन किया। इसी कारण आधुनिक हिन्दी साहित्य के द्वितीय उत्थान (सुधार काल) को महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर द्विवेदी युग भी कहा जाता है। इनके प्रयासों से ही खड़ी बोली काव्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

द्विवेदी जी ने भारतीय जातीय परंपरा का समालोचनात्मक दृष्टि से गहन अध्ययन किया एवं प्रासंगिक, विवेकसम्मत परंपराओं का समर्थन कर रूढ़ियों का विरोध किया। इनके लेखन में सरलता, सुबोधता, एवं परिनिष्ठता के गुण झलकते हैं।

## रचनाएँ –

**मौलिक रचनाएँ** – काव्य मंजूषा, सुमन, अबला विलाप, कान्यकुब्ज, कविताकलाप (काव्य) अद्भुत आलाप, संपत्तिशास्त्र, महिलामोद, रसज्ञरंजन, साहित्य सीकर (गद्य)

**अनूदित रचनाएँ**– विनयविनोद, स्नेहमाला, ऋतुतरंगिनी (पद्य) भामिनीविलास, रघुवंश, वेणी संहार, बेकन–विचार रत्नावली, स्वाधीनता (गद्य)।

## पाठ परिचय –

प्रस्तुत निबंध द्विवेदी जी के 'महिला मोद' शीर्षक निबंध संग्रह से लिया गया है। यह निबन्ध प्रथम बार सितम्बर 1914 को 'सरस्वती' पत्रिका में 'पढ़े लिखों का पांडित्य' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था।

21 वीं शताब्दी में स्त्रियाँ शिक्षा, विज्ञान, सरकारी सेवा, निजी क्षेत्र, व्यापार एवं वाणिज्य सहित सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर समाज निर्माण एवं विकास में अपना योगदान दे रही हैं। लेकिन इस स्थिति में पहुँचने के लिए स्त्री शिक्षा के पक्षधर सुधारकों को पुरुष प्रधान एवं रूढ़िवादी समाज से कड़ा संघर्ष करना पड़ा।

प्रस्तुत निबंध स्त्री शिक्षा को समाज एवं परिवार के विघटन एवं पतन के लिए जिम्मेदार ठहराने वाली दकियानूसी सोच को अकाट्य तर्कों द्वारा सिरे से खारिज करता है। साथ ही इसमें इन दकियानूसी एवं अप्रसांगिक परम्पराओं के अंधानुकरण के बजाय विवेक सम्मत एवं तर्कपूर्ण परंपराओं को ही ग्रहण करने की बात कही गई है। इसकी भाषा शैली हिन्दी के द्विवेदी युगीन गद्य की एक बानगी प्रस्तुत करती है।

# स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

बड़े शोक की बात है, आजकल भी ऐसे लोग विद्यमान हैं जो स्त्रियों को पढ़ाना उनके और गृह–सुख के नाश का कारण समझते हैं। और, लोग भी ऐसे–वैसे नहीं, सुशिक्षित लोग–ऐसे लोग जिन्होंने बड़े–बड़े स्कूलों और शायद कॉलिजों में भी शिक्षा पाई है, जो धर्म–शास्त्र और संस्कृत के ग्रंथ साहित्य से परिचय रखते हैं, और जिनका पेशा कुशिक्षितों को सुशिक्षित करना, कुमार्गगामियों को सुमार्गगामी बनाना और अधार्मिकों को धर्मतत्त्व समझाना है। उनकी दलीलें सुन लीजिए–

1. पुराने संस्कृत–कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियों से अपढ़ों की भाषा में बातें कराई गई हैं। इससे प्रमाणित है कि इस देश में स्त्रियों को पढ़ाने की चाल न थी। होती तो इतिहास–पुराणादि में उनको पढ़ाने की नियमबद्ध प्रणाली जरूर लिखी मिलती।
2. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। शकुंतला इतना कम पढ़ी थी कि गँवारों की भाषा में मुश्किल से एक छोटा–सा श्लोक वह लिख सकी थी। तिस पर भी उसकी इस इतनी कम शिक्षा ने भी अनर्थ कर डाला। शकुंतला ने जो कटु वाक्य दुष्यंत को कहे, वह इस पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था।
3. जिस भाषा में शकुंतला ने श्लोक रचा था वह अपढ़ों की भाषा थी। अतएव नागरिकों की भाषा की बात तो दूर रही, अपढ़ गँवारों की भी भाषा पढ़ाना स्त्रियों को बरबाद करना है।

इस तरह की दलीलों का सबसे अधिक प्रभावशाली उत्तर उपेक्षा ही है। तथापि हम दो–चार बातें लिखे देते हैं।

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का । अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन–सी भाषा बोलती थीं ? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी ? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के हैं उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी ? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों उपदेश देते ? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं। जिन पंडितों ने गाथा–सप्तशती, सेतुबंध–महाकाव्य और कुमारपालचरित आदि ग्रंथ प्राकृत में बनाए हैं, वे यदि अपढ़ और गँवार थे तो हिंदी के प्रसिद्ध से भी प्रसिद्ध अखबार का संपादक इस जमाने में अपढ़ और गँवार कहा जा सकता है ; क्योंकि वह अपने जमाने की प्रचलित भाषा में अखबार लिखता है। हिंदी, बाँगला आदि भाषाएँ आजकल की प्राकृत हैं, शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री और पाली आदि भाषाएँ उस जमाने की थीं। प्राकृत पढ़कर भी उस जमाने में लोग उसी तरह सभ्य, शिक्षित और पंडित हो सकते थे जिस तरह कि हिंदी, बाँगला, मराठी आदि भाषाएँ पढ़कर इस जमाने में हम हो सकते हैं। फिर प्राकृत बोलना अपढ़ होने का सबूत है, यह बात कैसे मानी जा सकती है ?

जिस समय आचार्यों ने नाट्यशास्त्र–संबंधी नियम बनाए थे उस समय सर्वसाधारण की भाषा संस्कृत न थी। चुने हुए लोग ही संस्कृत बोलते या बोल सकते थे। इसी से उन्होंने उनकी भाषा संस्कृत और दूसरे लोगों तथा स्त्रियों की भाषा प्राकृत रखने का नियम कर दिया।

पुराने जमाने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था। फिर नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य। और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो ? पुराने जमाने में विमान उड़ते थे। बताइए उनके बनाने की विद्या सिखाने वाला कोई शास्त्र! बड़े–बड़े जहाज़ों पर सवार होकर लोग द्वीपांतरों को जाते थे। दिखाइए, जहाज बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रंथ ! पुराणादि में विमानों और जहाज़ों द्वारा की गई यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परंतु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मूर्ख, अपढ़ और गँवार बताते हैं! इस तर्कशास्त्रज्ञता और इस

न्यायशीलता की बलिहारी! वेदों को प्रायः सभी हिंदू ईश्वर–कृत मानते हैं। सो ईश्वर तो वेद–मंत्रों की रचना अथवा उनका दर्शन विश्ववरा आदि स्त्रियों से करावे और हम उन्हें ककहरा पढ़ाना भी पाप समझें। शीला और विज्जा आदि कौन थीं ? वे स्त्री थीं या नहीं ? बड़े–बड़े पुरुष–कवियों से आदृत हुई हैं या नहीं ? शार्ङगधर–पद्धति में उनकी कविता के नमूने हैं या नहीं ? बौद्ध–ग्रंथ त्रिपिटक के अंतर्गत थेरीगाथा में जिन सैकड़ों स्त्रियों की पद्य–रचना उद्धृत है वे क्या अपढ़ थीं ? जिस भारत में कुमारिकाओं को चित्र बनाने, नाचने, गाने, बजाने, फूल चुनने, हार गूँथने, पैर मलने तक की कला सीखने की आज्ञा थी उनको लिखने–पढ़ने की आज्ञा न थी। कौन विज्ञ ऐसी बात मुख से निकालेगा ? और, कोई निकाले भी तो मानेगा कौन?

अत्रि की पत्नी पत्नी–धर्म पर व्याख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े–बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे! गज़ब! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है। न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करतीं। यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है। समझे। स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट! ऐसी ही दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं।

मान लीजिए कि पुराने ज़माने में भारत की एक भी स्त्री पढ़ी–लिखी न थी। न सही। उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की ज़रुरत न समझी गई होगी। पर अब तो है। अतएव पढ़ाना चाहिए। हमने सैकड़ों पुराने नियमों, आदेशों और प्रणालियों को तोड़ दिया है या नहीं ? तो, चलिए, स्त्रियों को अपढ़ रखने की इस पुरानी चाल को भी तोड़ दें। हमारी प्रार्थना तो यह है कि स्त्री–शिक्षा के विपक्षियों को क्षणभर के लिए भी इस कल्पना को अपने मन में स्थान न देना चाहिए कि पुराने ज़माने में यहाँ की सारी स्त्रियाँ अपढ़ थीं अथवा उन्हें पढ़ने की आज्ञा न थी। जो लोग पुराणों में पढ़ी–लिखी स्त्रियों के हवाले माँगते हैं उन्हें श्रीमद्भागवत, दशमस्कंध, के उत्तरार्द्ध का त्रेपनवाँ अध्याय पढ़ना चाहिए। उसमें रुक्मिणी–हरण की कथा है। रुक्मिणी ने जो एक लंबा–चौड़ा पत्र एकांत में लिखकर, एक ब्राह्मण के हाथ, श्रीकृष्ण को भेजा था वह तो प्राकृत में न था। उसके प्राकृत में होने का उल्लेख भागवत में तो नहीं। उसमें रुक्मिणी ने जो पांडित्य दिखाया है वह उसके अपढ़ और अल्पज्ञ होने अथवा गँवारपन का सूचक नहीं। पुराने ढंग के पक्के सनातन–धर्मावलंबियों की दृष्टि में तो नाटकों की अपेक्षा भागवत का महत्त्व बहुत ही अधिक होना चाहिए। इस दशा में यदि उनमें से कोई यह कहे कि सभी प्राक्कालीन स्त्रियाँ अपढ़ होती थीं तो उसकी बात पर विश्वास करने की जरुरत नहीं। भागवत की बात यदि पुराणकार या कवि की कल्पना मानी जाए तो नाटकों की बात उससे भी गई–बीती समझी जानी चाहिए।

स्त्रियों का किया हुआ अनर्थ यदि पढ़ाने ही का परिणाम है तो पुरुषों का किया हुआ अनर्थ भी उनकी विद्या और शिक्षा ही का परिणाम समझना चाहिए। बम के गोले फेंकना,

नरहत्या करना, डाके डालना, चोरियाँ करना, घूस लेना—ये सब यदि पढ़ने—लिखने ही का परिणाम हो तो सारे कॉलिज, स्कूल और पाठशालाएँ बंद हो जानी चाहिए। परंतु विक्षिप्तों, बातव्यथितों और ग्रहग्रस्तों के सिवा ऐसी दलीलें पेश करने वाले बहुत ही कम मिलेंगे। शकुंतला ने दुष्यंत को कटु वाक्य कहकर कौन—सी अस्वाभाविकता दिखाई ? क्या वह यह कहती कि—"आर्य पुत्र, शाबाश! बड़ा अच्छा काम किया जो मेरे साथ गांधर्व—विवाह करके मुकर गए। नीति, न्याय, सदाचार और धर्म की आप प्रत्यक्ष मूर्ति हैं!" पत्नी पर घोर से घोर अत्याचार करके जो उससे ऐसी आशा रखते हैं वे मनुष्य—स्वभाव का किंचित् भी ज्ञान नहीं रखते। सीता से अधिक साध्वी स्त्री नहीं सुनी गई। जिस कवि ने, शकुंतला नाटक में, अपमानित हुई शकुंतला से दुष्यंत के विषय में दुर्वाक्य कहाया है उसी ने परित्यक्त होने पर सीता से रामचंद्र के विषय में क्या कहाया है, सुनिए —

**वाच्यस्त्वया मद्वचनात् स राजा—**
**वह्नौ विशुद्धामति यत्समक्षम्।**
**मां लोकवाद श्रवणादहासीः**
**श्रुतस्य तत्किं सदृशं कुलस्य?**

लक्ष्मण! जरा उस राजा से कह देना कि मैंने तो तुम्हारी आँख के सामने ही आग में कूदकर अपनी विशुद्धता साबित कर दी थी। तिस पर भी, लोगों के मुख से निकला मिथ्यावाद सुनकर ही तुमने मुझे छोड़ दिया। क्या यह बात तुम्हारे कुल के अनुरूप है ? अथवा क्या यह तुम्हारी विद्वता या महत्ता को शोभा देने वाली है?

सीता का यह संदेश कटु नहीं तो क्या मीठा है? 'राजा' मात्र कहकर उनके पास अपना संदेसा भेजा। यह उक्ति न किसी गँवार स्त्री की ; किंतु महाब्रह्मज्ञानी राजा जनक की लड़की और मन्वादि महर्षियों के धर्मशास्त्रों का ज्ञान रखने वाली रानी को —

**नृपस्य वर्णाश्रमपालनं यत्**
**स एव धर्मो मनुना प्रणीतः**

सीता की धर्मशास्त्रज्ञता का यह प्रमाण, वहीं, आगे चलकर, कुछ ही दूर पर, कवि ने दिया है। सीता—परित्याग के कारण वाल्मीकि के समान शांत, नीतिज्ञ और क्षमाशील तपस्वी तक ने — **"अस्त्येव मन्युर्भरताग्रजे मे"** — कहकर रामचंद्र पर क्रोध प्रकट किया है। अतएव, शकुंतला की तरह, अपने परित्याग को अन्याय समझने वाली सीता का रामचंद्र के विषय में, कटुवाक्य कहना सर्वथा स्वाभाविक है। न यह पढ़ने—लिखने का परिणाम है न गँवारपन का, न अकुलीनता का।

पढ़ने—लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज़ नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अपढ़ों और पढ़े—लिखों, दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति—विशेष का चाल—चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।

जो लोग यह कहते हैं कि पुराने जमाने में यहाँ स्त्रियाँ न पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान–बूझकर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दंडनीय हैं। क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है – समाज की उन्नति में बाधा डालना है।

'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना–लिखना भी उसी के अंतर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा–प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने–लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा–प्रणाली कौन–सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलिज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देना चाहिए और कहाँ पर देना चाहिए–घर में या स्कूल में– इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आवे सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने–लिखने में कोई दोष है – वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह–सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

## कठिन शब्दार्थ

| | | |
|---|---|---|
| **दलीलें** | – | तर्क |
| **अपढ़ों** | – | अनपढ़ों, निरक्षर |
| **वेदांतवादिनी** | – | वेदांत दर्शन पर बोलने वाली |
| **दर्शक ग्रंथ** | – | जानकारी देने वाली पुस्तक |
| **तर्कशास्त्रज्ञता** | – | तर्कशास्त्र को जानना |
| **खंडन** | – | दूसरे के मत का युक्तिपूर्वक निराकरण करना |
| **प्रगल्भ** | – | प्रतिभावान |
| **नामोल्लेख** | – | नाम का उल्लेख करना |
| **आदृत** | – | आदर पाया, सम्मानित |
| **विज्ञ** | – | जानकार, विद्वान |
| **ब्रह्मवादी** | – | वेद पढ़ने–पढ़ाने वाला |

| | | |
|---|---|---|
| **दुराचार** | – | बुरा आचरण |
| **सह धर्मचारिणी** | – | पत्नी |
| **कालकूट** | – | जहर |
| **पीयूष** | – | अमृत |
| **दृष्टांत** | – | उदाहरण |
| **अल्पज्ञ** | – | थोड़ा जानने वाला |
| **प्राक्कालीन** | – | प्राचीन समय की, पुरानी |
| **व्याभिचार** | – | कुत्सित आचरण |
| **विक्षिप्त** | – | पागल |
| **बात व्यथित** | – | बातों से दुखी होने वाले। |
| **ग्रह ग्रस्त** | – | पाप ग्रह से प्रभावित। |
| **किंचित्** | – | थोड़ा |
| **दुर्वाक्य** | – | निंदा करने वाला वाक्य |
| **परित्यक्त** | – | पूरे तौर पर छोड़ा हुआ, परित्याग किया हुआ |
| **मिथ्यावाद** | – | झूठी बात। |
| **कलंकारोपण** | – | दोष मढ़ना। |
| **निर्भर्त्सना** | – | तिरस्कार, निंदा। |
| **नीतिज्ञ** | – | नीति जानने वाला। |
| **मुमानियत** | – | रोक, मनाही |
| **अभिज्ञता** | – | जानकारी, ज्ञान |
| **अपकार** | – | अहित। |

## अभ्यासार्थ प्रश्न

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया –
   (क) माधुरी (ख) जागरण (ग) कविवचन सुधा (घ) सरस्वती
2. शकुन्तला ने किस भाषा में श्लोक कहा?
   (क) अपभ्रंश (ख) प्राकृत (ग) शौरसेनी (घ) पाली

### अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

3. बौद्ध धर्म के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा क्या है?
4. रुक्मिणी–हरण की कथा कहाँ मिलती है?
5. पाठ में आये प्राचीनकालीन विदुषी महिलाओं के नाम लिखिए।
6. शकुंतला ने दुष्यंत के विषय में दुर्वाक्य क्यों कहे?
7. नाट्यशास्त्र संबंधी नियमों में स्त्री पात्रों के लिए कौन–सी भाषा निर्धारित की गई है?

### लघूत्तरात्मक प्रश्न -

8. "नाटकों में स्त्रियों द्वारा प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं हैं!" स्पष्ट कीजिए।
9. "यह सारा दुराचार स्त्रियों के पढ़ाने का ही कुफल है।" पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
10. द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के समर्थन में कौन–कौन से तर्क दिए है ?

### निबंधात्मक प्रश्न -

11. महावीर प्रसाद द्विवेदी का यह निबंध उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है। स्पष्ट कीजिए।
12. "स्त्री शिक्षा समाज के पतन का कारण नहीं वरन् समाज के विकास की सीढ़ी है" – इस कथन के आलोक में स्त्री शिक्षा पर अपने विचार लिखिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

    (क) पुराणादि में विमानों और जहाजों द्वारा .................................................. इस तर्कशास्त्रज्ञता और इस न्यायशीलता की बलिहारी।

    (ख) 'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है................................................खुद पढ़ने–लिखने को दोष न देना चाहिए।